

## नवभारत

संस्थापक : स्व. रामगोपाल माहेश्वरी

प्रेरणा स्रोत : स्व. प्रफुल्ल माहेश्वरी

## महिला मतदाताओं का निर्णायक उभार

सोमवार को जैसे ही बिहार विधानसभा चुनाव की तिथियों की घोषणा हुई, राजनीतिक सरगमी अपने चरम पर पहुंच गई. परंतु इस बार माहौल में एक नया आयाम स्पष्ट दिखाई दे रहा है, महिला मतदाताओं की निर्णायक भूमिका. बिहार की राजनीति में महिलाएं अब मात्र 'सहायक मतदाता' नहीं रही, बल्कि नीतियों, अभियानों और चुनावी रणनीतियों के केंद्र में आ चुकी हैं. हर दल इस शक्ति को महसूस कर रहा है और अपने-अपने तरीके से उन्हें आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है.

दरअसल, पिछले दो दशकों में बिहार में महिला मतदाताओं की भागीदारी में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है. 2020 के विधानसभा चुनाव में महिलाओं का मतदान प्रतिशत पुरुषों से लगभग चार फीसदी अधिक था. ग्रामीण इलाकों में तो यह अंतर और भी ज्यादा था. नीतीश कुमार की 'सशक्त नारी-सशक्त बिहार' जैसी योजनाओं ने एक समय महिला

वोट बैंक को सुचारु रूप से संगठित किया, जिसने उन्हें लगातार सत्ता में बने रहने का आधार भी दिया. लेकिन अब परिदृश्य बदल चुका है, महिला मतदाता केवल 'लाभार्थी' नहीं रही, बल्कि वे अब नीति-निर्धारण की सहभागी और सशक्त समीक्षक बन चुकी हैं. यही कारण है कि तेजस्वी यादव से लेकर उन्हें आकर्षित करने की कोशिश कर रहा है. तेजस्वी अपनी सभाओं में 'समान काम, समान वेतन' और महिला सुरक्षा के मुद्दे उठाते हैं, तो प्रशांत किशोर अपने जन सुराज अभियान के जरिए पंचायत स्तर पर महिला नेतृत्व को प्राथमिकता दे रहे हैं. भाजपा और जदयू अपने पारंपरिक महिला कल्याण योजनाओं—उज्वला, हर घर नल,

साइकिल योजना, और स्वयं सहायता समूहों के सहारे इस तबके में भरोसा बनाए रखने में जुटी हैं. राजनीति के जानकार मानते हैं कि बिहार में महिलाओं की राजनीतिक चेतना अब जाति और परंपरा से आगे निकल चुकी है. उन्हें यह एहसास हो गया है कि उनका वोट शिक्षा, रोजगार, और सामाजिक सुरक्षा से सीधे जुड़ा है. यही कारण है कि राजनीतिक दलों की चुनावी घोषणाओं में अब महिला उद्यमिता, स्वास्थ्य, पोषण और डिजिटल साक्षरता जैसे बिंदु प्रमुखता से शामिल किए जा रहे हैं.

इस बार चुनावी प्रचार में यह भी देखने को मिल रहा है कि महिला नेतृत्व को प्रतीक के रूप में नहीं, विकल्प के रूप में प्रस्तुत किया जा रहा है. युवा महिला उम्मीदवारों को टिकट

देने, महिला पंचायत प्रमुखों और स्वयं सहायता समूहों की ब्रांड एम्बेसडर के रूप में भागीदारी बढ़ाने की प्रवृत्ति तेज हुई है. यह बिहार की सामाजिक-राजनीतिक संरचना में गहरे परिवर्तन का संकेत है. कुल मिलाकर, 2025 का बिहार चुनाव इस बात की परीक्षा भी होगा कि क्या महिलाओं की बढ़ती राजनीतिक चेतना वास्तव में सत्ता परिवर्तन का निर्णायक कारण बन सकती है या नहीं. यह भी स्पष्ट है कि अब जो दल महिला मतदाता को केवल 'लाभार्थी वर्ग' समझेंगे, उसे झटका लगना तय है.

बिहार की राजनीति में महिला मतदाताओं की यह नई जागरूकता केवल किसी एक दल के पक्ष में नहीं, बल्कि लोकतंत्र की दिशा तय करने वाली एक शांत क्रांति है. आने वाले वर्षों में इसका प्रभाव न केवल बिहार, बल्कि पूरे देश की राजनीति पर गहराई से महसूस किया जाएगा.

## मध्यप्रदेश भाजपा एकजुटता के नारों के बीच गुटबाजी के संकेत



श्याम यादव

इन दिनों मध्यप्रदेश भाजपा में जोर आजमाइश का दौर चल रहा है. पार्टी में एकजुटता दिखावटी है. जबकि, हर इलाके में स्थानीय नेता आपस में ही गुटधर्म-गुट्या हो रहे हैं. नए अध्यक्ष ने आते ही सख्ती का माहौल जरूर बनाया, पर उसे दरकरते देर नहीं लगी. ग्वालियर, रोवा, इंदौर से लगाकर बुंदेलखंड तक में अलग-अलग गुट बन गए. ये हालात भविष्य के लिए अच्छा संकेत नहीं है.

भारतीय जनता पार्टी ने मध्यप्रदेश की राजनीति में लंबे समय से एक मजबूत आधार बना रखा है. संगठनात्मक मजबूती, कार्यकर्ताओं की जमीनी पकड़ और केंद्रीय नेतृत्व का लगातार मार्गदर्शन पार्टी को अन्य दलों से अलग बनाता रहा है. लेकिन पिछले कुछ वर्षों से यह साफ दिखने लगा है कि पार्टी की भीतरी खींचतान और गुटबाजी लगातार तेज होती जा रही है. प्रधानमंत्री और राष्ट्रीय नेतृत्व की सख्त नसीहतों के बावजूद प्रदेश की राजनीति में आपसी मनमुटाव, अहंकार और विरोधाभासी रुझान खुले तौर पर दिखाई दे रहे हैं.

यह स्थिति केवल छोटे कार्यकर्ताओं तक सीमित नहीं है बल्कि डिप्टी सीएम से लेकर मंत्रियों, सांसदों और विधायकों तक फैली हुई है. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया को लेकर उठी हलचल इसका ताजा उदाहरण है. मुरैना दौरे के दौरान सोशल मीडिया पर वायरल हुए एक पोस्टर ने पूरी राजनीति को हिला कर रख दिया. पोस्टर में साफ लिखा गया कि सिंधिया को मुख्यमंत्री बनाया जाए, अन्यथा %अपनी खैर मनाओ.% इस प्रकार का संदेश न केवल संगठनात्मक अनुशासन के विपरीत है बल्कि यह यह भी दर्शाता है कि पार्टी के भीतर अभी भी सत्ता की होड़ जारी है. प्रदेश में जब भी कोई बड़ा कार्यक्रम होता है, किसी न किसी रूप में ऐसी पोस्टरबाजी सामने आ ही जाती है. शिकायतें

पार्टी मुख्यालय तक पहुंचती हैं और उसके बाद अनुशासनात्मक कार्यवाही की चेतावनी दी जाती है. लेकिन हकीकत यह है कि इस तरह की घटनाएं थकती नहीं हैं.

रोवा में जो वाकया सामने आया, उसने स्थिति को और स्पष्ट कर दिया. पूर्व विधानसभा अध्यक्ष श्रीनिवास तिवारी की जन्मशताब्दी समारोह में मुख्यमंत्री तो शामिल हुए लेकिन स्वागत पोस्टरों से डिप्टी सीएम राजेंद्र शुक्ल की तस्वीर गायब रही. यह केवल साधारण चूक नहीं मानी जा सकती क्योंकि पूरे शहर में लगाए गए पोस्टरों से किसी एक वरिष्ठ नेता की तस्वीर का गायब होना यह संदेश देता है कि स्थानीय स्तर पर आपसी खींचतान कितनी गहरी है. डिप्टी सीएम की नाराजगी इस हद तक बढ़ गई कि उन्होंने कार्यक्रम में ही शिरकत नहीं की. इस तरह की घटनाएं केवल व्यक्ति विशेष को चोट नहीं पहुंचाती बल्कि संगठन की एकजुटता पर भी गहरा सवाल खड़ा करती हैं.

देवास में विधायक गायत्री राजे पवार के पोस्टरों को हटाए जाने का मामला इसी श्रृंखला की एक और कड़ी है. नवरात्रि से पहले शहर में उनके पोस्टर लगाए गए थे, लेकिन नगर निगम ने इन्हें हटवा दिया. इससे स्थिति इतनी बिगड़ी कि विधायक का पुत्र विक्रम राव अपने समर्थकों के साथ सड़क पर उतर आये और निगम अधिकारियों के खिलाफ मोर्चा खोल दिया. इस दौरान खुली धमकियां दी गईं और माहौल तनावपूर्ण हो गया. सवाल यह है कि आखिर किस आधार पर जनप्रतिनिधियों के पोस्टर हटाए जाते हैं और क्यों बार-बार ऐसे विवाद सामने आते हैं. यह केवल प्रशासनिक कदम नहीं लगता बल्कि इसके पीछे भी कहीं न कहीं राजनीतिक द्वेष और गुटबाजी का असर साफ झलकता है. इन तीन घटनाओं से यह स्पष्ट हो जाता है कि भाजपा के भीतर अनुशासन की स्थिति कमजोर पड़ रही है. पचमढ़ी में हुए विभिन्न शिविर में राष्ट्रीय नेताओं ने बार-बार संदेश दिया कि संगठन सबसे ऊपर है और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षाओं को नियंत्रित करना जरूरी है.

मध्यप्रदेश भाजपा की ताकत हमेशा से उसका संगठनात्मक अनुशासन और चुनावी मैनेजमेंट रहा है. लेकिन जब खुद विधायक, मंत्री और सांसद अनुशासन तोड़कर आपसी टकराव सार्वजनिक रूप से दिखाने लगे तो यह संगठन के लिए गंभीर संकेत का संकेत है. ग्वालियर-चंबल क्षेत्र में सिंधिया समर्थकों और पुराने भाजपा नेताओं के बीच खींचतान किसी से छुपी नहीं है. इसी तरह महाकौशाल और मालवा-निमा में भी कई नेताओं के बीच प्रतिस्पर्धा का असर पार्टी की छवि पर पड़ता है. आने वाले समय में यह गुटबाजी केवल आंतरिक असंतोष तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि यह चुनावी समीकरणों पर भी असर डाल सकती है. जनता ऐसे हालातों को बारीकी से देखती है और जब पार्टी के भीतर ही एकता नहीं दिखती तो मतदाता का भरोसा भी डगमगाता है. विपक्ष हमेशा ऐसे मुद्दों को भुनाने के लिए तत्पर रहता है. कांग्रेस पहले ही कई बार यह आरोप लगा चुकी है कि भाजपा केवल सत्ता की लालसा के लिए एकजुट दिखती है.

## निशानेबाज

## देश में सतत पर्यटन से साझा समृद्धि



गजेंद्र सिंह शिखावा

पर्यटन केवल यात्रा करना नहीं है, यह लोगों को जोड़ने वाला पुल है, रोजगार का साधन है और हमारी संस्कृति को दुनिया तक पहुंचाने का माध्यम है. पर्यटन और सतत परिवर्तन को समर्पित इस विश्व पर्यटन दिवस पर, यह समझना जरूरी है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के निर्णायक नेतृत्व में भारत की पर्यटन यात्रा को कैसे नया रूप दिया गया है. जो पहले कभी मौसमी और बिखरा हुआ क्षेत्र था, वह आज योजनाबद्ध, समावेशी और सतत राष्ट्रीय विकास का प्रमुख साधन बन गया है.

यह बदलाव केवल कल्पनाओं में नहीं, बल्कि लोगों की जिंदगी में दिखाई देता है. जून 2025 तक भारत में दिखते पर्यटकों की संख्या 16.5 लाख पहुंच गई, विदेश यात्रा करने वाले भारतीयों की संख्या 84.4 लाख रही और पर्यटन से विदेशी मुद्रा आय 51,532 करोड़ तक पहुंची. अकेले 2023-24 में ही इस क्षेत्र ने जीडीपी में 15.73 लाख करोड़ का योगदान दिया, जो अर्थव्यवस्था का पांच प्रतिशत से अधिक है और 8.4 करोड़ से ज्यादा नौकरियों को सहारा दिया. इन आंकड़ों के पीछे कारीगरों को नए

भारत का अनुभव यह साबित करता है कि जब सुसंगत नीति, राजकोषीय विवेक और समुदाय की भागीदारी दूरदर्शी नेतृत्व के तहत एक साथ आती है, तो असली बदलाव संभव होता है. इस विश्व पर्यटन दिवस पर, आइए हम यह संकल्प लें कि जिम्मेदारी के साथ यात्रा करेंगे, स्थानीय रोजगार का समर्थन करेंगे और हर यात्रा कार्यक्रम में विकसित भारत के वादे को जीवंत रखेंगे. सही ढंग से पोषित पर्यटन न केवल हमारी अर्थव्यवस्था का स्तंभ बनेगा, बल्कि भारत की सभ्यतागत लोक व्यवहार यानी खुला, सहनशील और आतिथ्यपूर्ण का जीवित प्रमाण भी बनेगा. आगे का रास्ता लंबा है, लेकिन प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में हमने वाहन तैयार कर लिया है. अब हमें इसे सावधानी, साहस और साझा उद्देश्य की भावना के साथ चलाना होगा.

बाजार मिलाना, परिवारों का होमस्टे शुरू करना, और गाइड, चालक व छोटे व्यवसायियों के लिए लगातार काम और मांग का अवसर जुड़ा हुआ है.

इस प्रगति के केंद्र में प्रधानमंत्री का यह विश्वास है कि पर्यटन को राष्ट्रीय प्राथमिकता होना चाहिए, न कि कोई हाशिये की गतिविधि. नए हवाईअड्डों, आधुनिक रेल नेटवर्क, नवनिर्मित राजमार्गों और आंतरिक जलमार्गों से बुनियादी ढांचे और कनेक्टिविटी का विस्तार किया गया. उड़ान योजना ने हवाई यात्रा को छोटे शहरों की पहुंच में ला दिया. धरोहर स्थलों और तीर्थ यात्राओं के मार्गों तक बेहतर अंतिम कनेक्टिविटी ने उन लाखों लोगों को लिए यात्रा संभव कर दी, जो पहले दूरी या खर्च

के कारण वंचित रह जाते थे. इस तरह पर्यटन अब केवल शहरी विलासिता न होकर संतुलित क्षेत्रीय विकास का साधन बन गया है. गंतव्य (डेस्टिनेशन) विकास भी इसी दृष्टि से आगे बढ़ाया गया है. स्वदेश दर्शन 2.0 और प्रसाद जैसे कार्यक्रम स्थिरता और सांस्कृतिक अखंडता को अपने केंद्र में रखते हैं. डेस्टिनेशन मैनेजमेंट ऑर्गेनाइजेशन की शुरुआत ने सरकार, निजी क्षेत्र और स्थानीय समुदायों को एक साथ जोड़ा है, ताकि संसाधनों का समझदारी से उपयोग हो और लाभ सब तक समान रूप से पहुंचे.

प्रधानमंत्री ने यह भी नया दृष्टिकोण दिया है कि भारत दुनिया के सामने खुद को कैसे प्रस्तुत करे. नए रूप में अतुल्य भारत पोर्टल,

वैश्विक यात्रा प्लेटफॉर्म के साथ साझेदारी और डिजिटल स्टोरोटेलिंग के नए तरीके ने सबसे छोटे संचालकों, ग्रामीण मेजबानों, होमस्टे चलाने वाले परिवार, सांस्कृतिक उद्यमियों को भी वैश्विक दर्शकों तक पहुंचने का अवसर दिया है. तकनीक अब केवल प्रचार का साधन ही नहीं रही, बल्कि डेटा-आधारित प्रबंधन के जरिए संवेदनशील स्थलों की सुरक्षा का माध्यम भी बन गई है.

हालांकि, इस बदलाव की सबसे बड़ी विशेषता स्थिरता है. प्रधानमंत्री ने अपने व्यापक लाइफ आंदोलन (लाइफस्टाइल फॉर एंगवार्मेंट) को आगे बढ़ाते हुए ट्रेवल फॉर लाइफ की शुरुआत की, जिसमें पर्यटन को भी पर्यावरण संरक्षण से जोड़ा गया. कम प्रभाव वाले ग्रामीण अनुभवों से लेकर पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बुनियादी ढांचे और जिम्मेदार तीर्थ प्रबंधन तक, पूरा जोर इस बात पर है कि यात्रा प्रकृति को संभालने वाली हो. भारत की जी20 अध्यक्षता के तहत, वैश्विक पर्यटन को सतत विकास लक्ष्यों के साथ जोड़ने के लिए गोवा रोडमैप को आगे बढ़ाया गया, जिसमें हरित विकास, कौशल विकास, डिजिटलीकरण और सूक्ष्म, लघु व मध्यम उद्यमों के समर्थन को वैश्विक चर्चा के केंद्र में रखा गया.

(लेखक भारत सरकार में केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री हैं.)

## खानी थी मैगी, बेचने गया अंगूठी

मैगी का आकर्षण किसी को मैडनेस या पागलपन तक पहुंचा सकता है. आज के बच्चों को हलवा, उप्पा, पोहा, मटरी, दालमोट, चिवाड़ा, इटली जैसा घरेलू नारता पसंद नहीं है. उन्हें सेवय्या या वर्मिसेली नहीं, बल्कि मैगी चाहिए जो कि आज का सुपर फास्टफूड है. टीवी के विज्ञापन को याद कीजिए जिसमें बच्चा कहता है- मम्मी, भूख लगी है, जवाब में मम्मी कहती है- बस 2 मिनिट्स! वह 2 मिनिट में मैगी बनाकर दे देती है. बच्चा भी खुश, मम्मी को भी तसल्ली! किचन में कौन कबत बर्बाद करे? पानी में मैगी उबाली, मसाले की पुड़या डाली और इस्टेंट नारता बनकर तैयार! बच्चे ही नहीं, कुछ बड़े भी मैगी खाने लगे हैं. ज्यादा टैस्ट या झनझनाट के लिए मसाले की 2 पुड़या मिला देते हैं. रोज ऐसा खाने से पेट में अल्सर हो जाता है. मैगी से इतनी दोस्ती करना महंगा पड़ता है. मैगी की दीवानगी का नजारा कानपुर में देखा गया. मां ने मैगी के लिए पैसे देने से मना किया तो एक 13 साल का बच्चा अपनी बहन की सगाई की अंगूठी लेकर सराफा बाजार में बेचने पहुंचा. सराफ शोफ अदमी था. उसने बच्चे से मोबाइल नंबर पूछा और उसकी मम्मी को फोन कर दुकान में बुलवाया और पूछा कि



मां ने मैगी के लिए पैसे देने से मना किया तो एक 13 साल का बच्चा अपनी बहन की सगाई की अंगूठी लेकर सराफा बाजार में बेचने पहुंचा.

वया यह अंगूठी आपकी है? महिला ने बताया कि यदि यह अंगूठी खो जाती तो बेटी की शादी टूट सकती थी. यह एंजिमेंट रिग है. दुकानदार ने अंगूठी लौटा दी. ऐसा है मैगी का मैजिक कि बच्चे से रहा नहीं गया. अंगूठी बेचने की नवदानी पर उतर आया. 13 साल की उम्र में बादशाह अकबर ने हिंदुस्तान की हूकूमत संभाली थी. वह मैगी के लालच में नहीं पड़ा था. आज के बच्चों को नहीं चाहिए परंपरागत नारता, उन्हें चाहिए मैगी, नूटल्स या पास्ता! मैगी पर कुछ समय के लिए रोक लगी थी क्योंकि उसमें हानिकारक रसायन पाए गए थे. बाद में फिर घड़ल्ले से बिकने लगी. अब मैगी बनाने वाली कंपनी चाहे तो उस बच्चे को अपना मॉडल बना ले, जो मैगी के एक पैकेट के लिए अंगूठी बेचने निकला था.

## संपादकीय बोर्ड

प्रबंध संपादक : सुमीत माहेश्वरी, समूह संपादक : क्रांति चतुर्वेदी

## शब्द-सागर : डॉ. सागर खादीवाला

## CROSS WORD 12044

1	2	3	4	5
6		7		10
		8		9
		11		
12			13	
14			15	
		16		17
18			19	

(उर्दू)

## ऊपर से नीचे

1. वस्तु, चीज, ऐसी वस्तु जो स्थान घेरती है (सं.) 2. रासायनिक विधि से जड़ी-बूटियों या खनिजों से बना नमक, सार, शोरा (सं.) 3. वह खेत पट्टा जिस पर चलचित्र दिखाया जाता है 4. आग, अग्नि (सं.) 5. दूटी-फूटी वस्तुओं को बेचने वाला व्यक्ति 8. भूमि की नाप जोख करने वाला (सर्वेअर) 10. टीसना, सालना 11. वह सीधी रेखा जो एक ही दिशा में गई हो 12. समेत, सहित, सहायक 13. प्रथा, रिवाज, किसी वस्तु का बराबर व्यवहार में आते रहना या होना 15. एक कंटीला वृक्ष या उसका फल, दफा, बार 16. पेड़ का धड़ 17.

## बाएं से दाएं

1. पक्ष (पंद्रह दिनों में) केवल एक बार भोजन करना (सं.) 4. न थकनेवाला 6. पत्नी, रखने वाला, सुली, फांसी 7. युवा 8. बीता हुआ समय, प्रेत, गत 9. काठ, काष्ठ, उधन 11. कोई काम या बात पूर्ण करना या समाप्त करना 12. घोड़े की एक प्रकार की तेज चल 13. प्रत्यक्ष, सबके सामने, प्रत्यक्ष रूप में 14. कंठ, गले की नली (उर्दू) 15. विक्रय करना, मूल्य लेकर कोई वस्तु देना 16. द्रव्य, बहने वाला (सं.) 18. खांस कर कफ बाहर निकालना 19. किस्मत, भाग

## Solution 12043

आ	मो	म	हा	ज	न
का	ग	क	स	क	ला
श	रा	र	त	क्र	ली
	ज	ब	र	न	त
क	मा	नी	नो	खो	
ला	र	क	प्रा	ह	क
क्र	सो	घ	र	स	मि
र	स	सा	ई	जो	श

## ज्योतिषाचार्य प्रियंका नारायणशंकर व्यास, कोतवाली बाजार, जबलपुर (म.प्र.)

## आज जिनका जन्मदिन है

वर्ष के प्रारंभ में स्त्री पक्ष से नवीन समाचारों की प्राप्ति होगी. सुख प्राप्त होगा. नवीन मित्र से भेंट होगी. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा की रूपरेखा बनेगी. वर्ष के प्रारंभ में शासन सत्ता का लाभ प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. मित्रों एवं भाइयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ प्राप्त होगा. वर्ष के अन्त में भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना पड़ेगा. व्यर्थ के वाद विवाद एवं मतभेद बढेंगे. मेघ और वृश्चिक राशि के व्यक्तियों

मेघ- मित्रों की कहासुनी का मलाल रहेगा, वैवाहिक चर्चाओं में सफलता मिलेगी, दूर दराज की यात्रा होगी, आर्थिक कार्यों में सवधानी रखें.

वृषभ- घर में किसी अतिथि आमन होने से व्यस्तता रहेगी, अचानक किसी अनसोचे कार्यों में सम्मिलित होना पड़ेगा, मित्रता उपयोगी रहेगी.

मिथुन- भावनाओं पर काबू रखें, नौकरी एवं राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, मन में संतोष बना रहेगा, सोचे हुए कार्यों में संदेह रह सकता है.

कर्क- एक से अधिक कार्य शुरू करने का मन बनेगा, धार्मिक कार्यों में खर्च होगा, विवादास्पद मामलों को सुलझाएँ, पदोन्नति का योग है.

को शासन सत्ता का सुख प्राप्त होगा. शिक्षा में रूचि रहेगी. वृष और तुला राशि के व्यक्तियों को व्यर्थ वाद विवाद हो सकता है. शिक्षा में व्यवधान के कारण मानसिक परेशानी होगी. सिंह राशि के व्यक्तियों को मित्र एवं भाइयों के सहयोग से राजनीतिक लाभ होगा. व्यापार के क्षेत्र में यात्रा का योग है. मकर और कुंभ राशि के व्यक्तियों को मित्र से भेंट होगी. धनु और मीन राशि के व्यक्तियों को भूमि भवन संबंधी विवाद का सामना करना होगा.

सिंह- मेहमानों की आवाजाही रहने से सफल रहेगी, व्यापार में सवधानी रखें, कोई नवीन सुख समाचार मिलेगा, निजी पुरुषार्थ से लाभ होगा.

कन्या- बुजुर्गों के स्वास्थ्य का ध्यान रखें, व्यवसाय में सफलता मिलेगी, पारिवारिक जिम्मेदारी आ सकती है, विवादास्पद कार्यों से दूर रहना हितकर रहेगा.

तूला- सकारात्मक सोच लाभकारी एवं राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी, किसी कार्य में परिश्रम अधिक करना पड़ेगा, शत्रु वर्ग सक्षम रहेगा, सूझबूझ से काम लेंगे.

वृश्चिक- जीवनसाथी की भावनाओं का मन बनेगा, परिवार में मतभेद हो सकता है, मानसिक संतुलन बनाये रखें, कामकाज के प्रति निष्ठा रहेगी.

## आज जन्म शिशु का भविष्य

आज जन्म लिया बालक स्वाभाव से अच्छा मधुर एवं स्वविवेकी होगा, हठ पुष्ट एवं व्यक्तित्ववान होगा, शरीर कोमल होगा, यह अपनी मनमर्जी का मालिक होगा, बुद्धिमान्नी से काम करेगा, मित्रों की संख्या सीमित रहेगी, प्रवास का शौकीन होगा.

धनु- आप जिसे घाटे का सौदा समझें, उसमें लाभ होगा, वाहन चलाने समय सावधानी रखें, पुण्य व्यक्तिकी सलाह अवश्य लेंगे, कामकाज के प्रति सतर्क रहें.

मकर- अधिकारियों की अन्देखों से नुकसान होगा, साहस प्रकल्प में वृद्धि होगी, यश मिलेगा, अतिथि आमन होगा, संयम से कार्य करें.

कुम्भ- कानूनी मामलों में सफलता मिलेगी, सुख साधनों में वृद्धि होगी, अतिथि आमन होगा, कोई मांगलिक कार्यों को योजना बनेगी.

मीन- अपनी गलती मानने की बजाय दूसरों को दोष देंगे, जिससे संयम विगड़ सकते हैं, अधिकारियों के आदेश की अवहेलना न करें.

## उदयकालीन ग्रह चाल

9	8	के.7.रू.	6	5
		च.च.		
	10		4	
11		1	रा.	3
	12		2	

## पंचांग

रा.मि. 16 संवत् 2082 कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा बुधवासरे प्रातः 7/29 तदुपरि द्वितीया तिथी रातअंत 5/11, अश्विनी नक्षत्रे रात 2/9, व्याघात योगे प्रातः 8/53 तदुपरि हर्षण योगे रातअंत 5/53, कौलव करणे सू.उ. 6/11, सू.अ. 5/49, चन्द्रचार मेघ, पूर्व-अशुशुचन व्रत, शु.रा. 1,3,4,7,8,11 अ.रा. 2,5,6,9,10,12 शुभांक- 3,5,9.

## व्यापार भविष्य

कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा/द्वितीया को अश्विनी नक्षत्र के प्रभाव से रूई, सूत, कपास, सूत, सन, जूट, पाट, बारदाना, आदि के भाव में घटबढ़ रहेगी, सोना, चांदी, के भाव में उतार चढ़ाव आयेगा, भायांक 2508 है.

## SUDOKU 7176

2				5				
	1		8					9
7				4				
		9			1			
	3					6		
	8			5				
5			3		2			8
	4			6				7

प्रत्येक पंक्ति में 1 से 9 तक के अंक भरे जाने आवश्यक है. इनका क्रमवार होना आवश्यक नहीं है. आड़ी और खड़ी पंक्ति में एवं 333 के वर्ग में किसी भी अंक की पुनरावृत्ति न हो इसका विशेष ध्यान रखें. पहले से मौजूद अंकों को आप हटा नहीं सकते. पहले की का केवल एक ही हल है.

## नवभारत सू-दोके 7175

2	3	6	8	5	1	4	9	7
9	4	5	7	6	3	8	2	1
1	7	8	2	9	4	6	5	3
3	1	9	6	7	2	5	4	8
5	6	2	1	4	8	3	7	9
7	8	4	5	3	9	1	6	2
4	9	1	3	2	5	7	8	6
8	2	7	4	1	6	9	3	5
6	5	3	9	8	7	2	1	4